nbt.india
एक: सूते सकलम्

साक्षर भारत

मूल्य : एक प्रति ₹ 0.50
वार्षिक ₹ 5.00

नेशनल बुक ट्रस्ट साक्षरता संवाद

साक्षरताकर्मियों के लिए

अक्तूबर 2013 वर्ष 18, अंक 10

25 अक्तूबर, दक्षिण भारत में महिला दिवस

रानी चेनम्मा : अँग्रेजों को दी टक्कर

रानी चेनम्मा तत्कालीन मैसूर राज्य (अब कर्नाटक) में कित्तूर की महारानी थी। शासक पति एवं अपने पुत्र की मृत्यु के पश्चात रानी ने अपने दत्तक पौत्र का राज्याभिषेक किया (1824)। अँग्रेज सरकार ने इसे नहीं माना और 23 अक्तूबर, 1824 को कित्तूर के दुर्ग पर हमला कर दिया। रानी के सैनिकों के कड़े प्रतिरोध के सामने अँग्रेज टिक न सके व हार गए। अँग्रेज सेना ने 30 नवंबर को पुनः कित्तूर को घेरा, लेकिन उन्हें एक बार फिर पराजय देखना पड़ा। तब अँग्रेजों ने छल का सहारा लिया। कित्तूर के किलेदार को लालच दे अपने पक्ष में करके तथा रानी के कुछ सैनिकों के विश्वासघात का फायदा उठाकर अँग्रेजों ने रानी चेनम्मा को कैद कर लिया।

लेकिन रानी ने हार नहीं मानी। रानी को छुड़ाने गई निहत्थी जनता पर अँग्रेजी सेना ने भारी क्रूरता दिखाई। लेकिन अंततः रानी झुकी नहीं, और कैद में रहते हुए धारवाड़ में 21 फरवरी, 1829 को स्वर्ग सिधार गई।

23 अक्तूबर को रानी ने विश्व की सबसे बड़ी शक्ति को ललकारा था। अतः दक्षिण भारत में यह दिन रानी चेनम्मा की याद में 'महिला दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

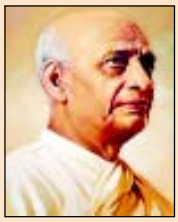

हिंदी का पेट महासागर की तरह विस्तृत है, जिसमें सब भाषाएँ समा सकती हैं। वह राष्ट्रभाषा है। राष्ट्रभाषा न तो किसी प्रांत और न तो किसी जाति की है, वह सारे भारत की भाषा है। इसके लिए जरूरी है कि सारे भारत के लोग इसे समझ सकें और अपनाने में गौरव हासिल कर सकें। —**सरदार वल्लभभाई पटेल,** भारत के प्रथम स्वराष्ट्रमंत्री

जन्मदिन स्मरण, 31 अक्तूबर (1875)

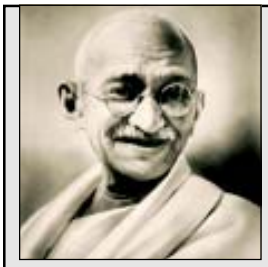

मेरे सपनों का भारत

मैं ऐसे भारत के लिए कोशिश करूँगा जिसमें गरीब-से-गरीब आदमी भी यह महसूस करे कि यह उसका देश है, जिसके निर्माण में उसकी आवाज का महत्व है। मैं ऐसे भारत के लिए कोशिश करूँगा, जिसमें ऊँच-नीच का कोई भेद न हो। जातियाँ मिल-जुलकर रहती हों। ऐसे भारत में, अस्पृश्यता व शराब तथा नशीली चीजों के अनिष्टों के लिए, कोई स्थान न होगा। उसमें स्त्रियों को पुरुषों के समान अधिकार मिलेंगे। सारी दुनिया से हमारा संबंध शांति और भाईचारे का होगा।

यह है मेरे सपनों का भारत!

जयंती, 2 अक्तूबर —**मोहनदास करमचंद गाँधी**

अंतरराष्ट्रीय ग्रामीण महिला दिवस, 15 अक्तूबर

हर वर्ष 15 अक्तूबर को अंतरराष्ट्रीय ग्रामीण महिला दिवस मनाया जाता है। संयुक्त राष्ट्र द्वारा इस दिवस को मनाए जाने का उद्देश्य ग्रामीण महिला के कार्य एवं समुदाय के प्रति उनके योगदान का सम्मान करना है।

भारत का प्रत्येक बच्चा अपनी मातृभाषा सीखे, राष्ट्रीय संपर्क भाषा के रूप में हिंदी सीखे और अंतरराष्ट्रीय संपर्क भाषा के रूप में अँग्रेजी सीखे।

श्रीमती इंदिरा गाँधी, भारत की पूर्व प्रधानमंत्री

पुण्यतिथि स्मरण, 31 अक्तूबर (1984)

ऐसे जियो मानो कल तुम्हारी मौत हो जाएगी। ऐसे सीखो मानो तुम हमेशा जीवित रहोगे। —महात्मा गाँधी

बढ़ते ही चलें रात में प्रभात के लिए

संध्या विश्व, *नागदा जं., म.प्र.*

रात गई सुबह हुई, टूटा भ्रमित सपना
प्रखर सूरज से सीखें, जग रोशन करना

जीवन में हर व्यक्ति सफलता पाना चाहता है परंतु कुछ ही लोग सफलता के शिखर पर पहुँच पाते हैं। कुछ लोगों को लाख चाहने पर भी सफलता नहीं मिल पाती। सफल व्यक्ति हमसे अलग कोई विशेष नहीं होते, बस जरूरत है कुछ खास बातों पर अमल करने की। वाकई, कोशिश करने पर सफलता मिलना तय है। सफलता के लिए मन में दृढ़ संकल्प होना अत्यंत आवश्यक है।

लहरों से डरकर नौका पार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती
डुबा दे कश्ती को उसे तूफान कहते हैं
जो तूफानों से टकराए उसे इनसान कहते हैं।

सफलता के लिए जरूरी है हमेशा अपनी शक्ति और सामर्थ्य के अनुसार सही लक्ष्य का निर्धारण, अन्यथा असफलता का सामना करना पड़ सकता है। बहुधा लोग सफलता के मात्र सपने देखते हैं वहीं सामर्थ्यवान व्यक्ति अपने सपनों को साकार करने के लिए लगन, निष्ठा व मेहनत से निरंतर सृजनशील रहते हैं। इसलिए जीवन में सफलता के सपने जब भी देखें तो बड़े ही देखें। तमाम योग्यता और कुशलता के बावजूद कुछ लोग हमेशा पीछे रह जाते हैं, क्योंकि वे समय रहते अपने लक्ष्य को हासिल नहीं कर पाते। इसका सबसे बड़ा कारण है आत्मविश्वास का न होना। जीवन में जो भी व्यक्ति निराश और निष्क्रिय होगा वह कभी सफल नहीं हो सकता। अर्थात हमारे जीवन में सकारात्मक सोच और आत्मविश्वास आवश्यक है।

इरादे नेक हों तो सपने साकार होते हैं,
सच्ची लगन हो तो रास्ते आसान होते हैं।

एक आत्मविश्वास ही है जो हमें कभी भी अपने मार्ग से विचलित नहीं होने देता, जिसने आत्मविश्वास खो दिया उसने सब कुछ खो दिया। अतः अपनी शक्तियों को जानकर उस पर भरोसा करना बहुत जरूरी है। इसी भरोसे के साथ भविष्य में मिलने वाली कामयाबी को अपनी कल्पना में साकार करने की कोशिश करें। अपने लक्ष्य को साकार करने की अद्‌भुत, अलौकिक शक्ति का संचार आपके हृदय में होना ही चाहिए, क्योंकि इसी शक्ति के माध्यम से धैर्य, साहस और विश्वास के साथ अपने लक्ष्य को हासिल कर सकते हैं। जिस प्रकार एक नन्ही चींटी ऊँचाई पर चढ़ते समय सैकड़ों बार गिरती है पर अपना लक्ष्य नहीं बदलती और उसे हासिल करके ही दम लेती है उसी प्रकार धैर्य और विश्वास के साथ अपने लक्ष्य पर डटे रहना बेहद जरूरी है। इतिहास गवाह है, सफलता उन्हीं लोगों को मिली है जिन्होंने अपने रास्ते खुद बनाए हैं। कवि जगन्नाथ विश्व की ये काव्य पंक्तियाँ अंदाजे बयाँ हैं जो हमारे जीवन में सफलता के लिए गति प्रदान करती हैं–

चाहे रास्ते गतिरोध हो आघात के लिए,
बढ़ते ही चलें रात में प्रभात के लिए।

मिसाल

ज्ञान की चाबी बाँटते हैं वे

गाँव-गाँव में कंप्यूटर लगाने का काम करते-करते उन्हें अहसास हुआ कि गाँव-खेड़े के लोगों को तो असल में ज्ञान की चाबी चाहिए, तभी वे अपने विकास का रास्ता खुद तय करने के काबिल बन सकेंगे। और तभी उन्होंने शुरू किया 'ज्ञान-की वाचनालय'। यानी ज्ञान की चाबी वाचनालय। हिंदी-अँग्रेजी के 'फ्यूजन' वाले इस संगठन का काम चल निकला। इस वाचनालय को चलाने वाले कर्मयोगी हैं प्रदीप लोखंडे। ये महाराष्ट्र से हैं। प्रदीप जी को लगा कि गाँवों में अच्छी पुस्तकों की बड़ी कमी है। सो, उन्होंने गाँववालों की जरूरत और उपयोगिता को ध्यान में रखकर किताबों की सूची तैयार की। किताबों के लिए राशि का प्रबंध भी हो गया। उनके ही जैसे सोच रखने वाले लोग कम नहीं थे। बस, देर थी उन्हें जगाने की। प्रदीप जी ने वैसे लोगों को उत्प्रेरित करने का काम किया। महानगरों के वे लोग, जिनकी पृष्ठभूमि कभी गाँवों की थी, उन्हें आर्थिक मदद देने लगे। लोगों का सहयोग मिला तो उनकी महत्वाकांक्षा भी बढ़ी। सन् 2011 में जब उन्होंने यह कार्य शुरू किया शुरुआती दौर में ही उन्होंने 400 दिनों में 400 गाँवों के माध्यमिक स्कूलों में वाचनालय खोल दिया। और अब उनका लक्ष्य 5000 गाँवों में ऐसे वाचनालय खोलने का है। इस उपक्रम की खास बात यह है कि 'ज्ञान-की' के तहत पुस्तकें वितरित करने का पूरा काम विद्यार्थी, खासकर छात्राएँ संभालती हैं। पूना के इर्द-गिर्द के गाँवों से शुरू यह अभियान अब महाराष्ट्र के अन्य हिस्सों में भी चल रहा है।

चूँ मन तुती एक हिन्दम अज रासत पुर्सी
जमन हिन्दवी पुर्स ता नग्ज गायम।

(सही पूछो तो मैं हिंदी का तोता हूँ। यदि तुम मुझसे मीठी बातें करना चाहते हो तो हिन्दवी में करो)।

अमीर खुसरो की फारसी रचना की प्रस्तावना में हिन्दवी (हिंदी) के प्रति निष्ठा इस तरह व्यक्त हुई है। **–संपा.**

संविधान सभा ने 14 सितंबर, 1949 को हिंदी को राजभाषा के रूप में मान्यता दी।

लाल बहादुर शास्त्री : सहज-सरल व्यक्तित्व

एक बार ऐसा हुआ कि वे (लाल बहादुर शास्त्री) गृहमंत्री के रूप में आगरा जा रहे थे। स्टेशन पर उनके स्वागत के लिए काफी लोग ट्रेन के आने की प्रतीक्षा कर रहे थे। अधिकारी फर्स्ट क्लास के डिब्बे में उनको लेने गए, लेकिन निर्धारित कार्यक्रम के रहते हुए भी उनको न पाकर निराश हुए। उन्हें ऐसा लगा कि मंत्री जी नहीं आए।

शास्त्री जी ट्रेन के तीसरे दर्जे के डिब्बे से उतरे और गेट से बाहर निकलने के लिए आगे बढ़े। तब एक कांस्टेबल ने उन्हें डाँट दिया, "खड़े रहो, पहले मंत्री जी निकल जाएँ तब बाकी लोग जाएँगे।"

शास्त्री जी चुपचाप एक ओर खड़े हो गए। अधिकारी निराश होकर आपस में बातें करते हुए जब गेट के पास आए तो शास्त्री जी को गेट के एक तरफ खड़े देखा। वे चकित रह गए, उनके मंत्री जी यहाँ खड़े थे। उन्होंने अपनी भूल सुधारने के लिए बड़ी तत्परता से उनका स्वागत किया तथा हार आदि पहनाए। इससे पहले कि शास्त्री जी आगे बढ़ें, उन्होंने मुसकराते हुए उस कांस्टेबल को रोका, वह सन्न था। काटो तो खून नहीं, लेकिन शास्त्री जी ने हँसकर कहा, "मुझे खुशी है कि तुमने अपनी ड्यूटी अच्छी तरह निभाई है।" ऐसा कहते हुए वे आगे बढ़ गए। साधारण ओहदे का कांस्टेबल अपने मंत्री के असाधारण और सौम्य व्यवहार देखकर भौंचक था।

(रा.पु. न्यास से प्रकाशित पुस्तक 'लाल बहादुर शास्त्री', ले. : राष्ट्रबंधु–सतत शिक्षा पुस्तकमाला–से उद्धृत)

महात्मा गाँधी के अनुसार

राष्ट्रभाषा के क्या-क्या लक्षण होने चाहिए?

- वह भाषा सरकारी नौकरों के लिए आसान होनी चाहिए।
- उस भाषा के द्वारा भारत का आपसी धार्मिक, आर्थिक और राजनैतिक कामकाज होना चाहिए।
- उस भाषा को भारत के ज्यादातर लोग बोलते हों।
- वह भाषा राष्ट्र के लिए आसान हो।
- उस भाषा का विचार करते समय क्षणिक या कुछ समय तक रहने वाली स्थिति पर जोर न दिया जाए।

अँग्रेजी भाषा में इनमें से एक भी लक्षण नहीं है।
हिंदी भाषा में ये सारे लक्षण मौजूद हैं।

('मेरे सपनों का भारत' से उद्धृत)

ऐसे थे बापू

शंकरलाल भाई बापू के लिए सुबह गरम पानी तैयार करते थे। एक दिन बापू ने कहा–शंकरलाल, आज पानी गरम नहीं करना है। अंगीठी मत जलाना।

शंकरलाल भाई ने सोचा–मुझे अंगीठी जलानी पड़ती है। शायद बापू इसीलिए मना कर रहे हैं। अंतः पूछा–क्यों?

उन्हें जो उत्तर मिला उससे वे अचरज में पड़ गए। बापू ने कहा–रात में कंदील (लालटेन) जलता है। अतः उस पर गिलास रख दूँगा। सुबह तक पानी गरम हो जाएगा। उसे ही पी लूँगा। फिर बोले–ऐसा करने से कोयले बच जाएँगे। पानी भी गरम हो जाएगा।

शंकरलाल भाई बोले–मैं तो डर रहा था। आपको मेरे काम से संतोष नहीं है। आप तो नया प्रयोग करने जा रहे हैं। अब मैं क्या कहूँ?

–उमाशंकर जोशी

गाँधी जी के विचार

शिक्षा : सच्ची शिक्षा वह है जो हमारे भीतर के उत्तम तत्वों को बाहर लाकर प्रकट करती है। मानवता की पुस्तक से बढ़कर दूसरी कौन-सी पुस्तक हो सकती है!

अक्षर-ज्ञान : अक्षर-ज्ञान से जीवन का सौंदर्य बढ़ता है, लेकिन यह बात गलत है कि उसके बिना मनुष्य का नैतिक, शारीरिक और आर्थिक विकास हो ही नहीं सकता।

पढ़ाई : आलस्यवश जो पढ़ता नहीं वह अवश्य मूढ़ माना जाएगा, पर जो खाली पढ़ा ही करता है, विचार नहीं करता वह भी लगभग मूढ़ जैसा ही रहता है।

सत्य : सत्य से अलग कोई सौंदर्य नहीं है। दूसरी ओर, सत्य ऐसे स्वरूपों में अपने को प्रकट कर सकता है जो बाहर से देखने में जरा भी सुंदर न हों।

साहित्य केवल मनबहलाव की चीज नहीं है, मनोरंजन के अलावा उसका और भी कुछ उद्देश्य है। ...वह अपने काल का प्रतिबिंब होता है। **प्रेमचंद, पुण्यतिथि, 8 अक्तूबर (1936)**

पुस्तकालय मन के लिए एक अस्पताल के समान है।

जन्मदिन स्मरण, 4 अक्तूबर

श्यामजी कृष्ण वर्मा : सच्चा सपूत

4 अक्तूबर, 1857 को कच्छ, गुजरात में जन्म लेने वाले श्यामजी एक अपूर्व क्रांतिकारी थे। इन्होंने अपनी गतिविधियाँ इंग्लैंड, जर्मनी, फ्रांस व स्विट्जरलैंड आदि देशों से संचालित कीं। इंग्लैंड में 1905 में इन्होंने 'होमरूल सोसायटी' की स्थापना की। एक अखबार भी निकाला। प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान इन्हें फ्रांस से स्विट्जरलैंड भागना पड़ा। वहीं 73 वर्ष की आयु में 1930 में इनका निधन हुआ। लेकिन देश के लिए इनके योगदान को राष्ट्र भुला नहीं सकता।

वन्य जीव प्राणी सप्ताह

1952 में, देश के वन्य जीवों की कई प्रजातियों के विलुप्त होने के मद्देनजर, भारत सरकार ने भारतीय वन्य जीव बोर्ड का गठन किया। लोगों में वन्य जीवों के प्रति जागरूकता-विकास हेतु इस बोर्ड ने प्रति वर्ष 2 से 8 अक्तूबर को वन्य जीव प्राणी सप्ताह घोषित किया। तभी से यह दिवस सारे देश में मनाया जाने लगा।

विश्व दृष्टि दिवस

विश्व दृष्टि दिवस प्रत्येक वर्ष अक्तूबर माह के दूसरे गुरुवार को मनाया जाता है। यह अंधत्व और दृष्टिहीनता के प्रति जनजागरूकता जगाने के उद्देश्य से मनाया जाता है। इस वर्ष यह दिवस **10 अक्तूबर** को मनाया गया।

विश्व वृद्धजन दिवस

दिसंबर, 1990 में संयुक्त राष्ट्र की आम सभा की संकल्पना के अनुसार 1 अक्तूबर, 1991 से प्रति वर्ष विश्व भर में विश्व वृद्धजन दिवस मनाया जाता है।

जन्मदिन स्मरण, 14 अक्तूबर

लाला हरदयाल : गदर पार्टी के संस्थापक

14 अक्तूबर, 1884 को दिल्ली में जन्म। सरकार द्वारा आगे की पढ़ाई के लिए इंग्लैंड भेजे गए। श्यामजी वर्मा व मैडम कामा के संपर्क में आकर क्रांतिकारी बन गए। 1911 में अमेरिका में लेक्चरर नियुक्त। 1913 में यहीं गदर पार्टी का गठन किया। 'गदर' नाम से पत्र प्रकाशन भी। ब्रिटिश सरकार के दबाव पर अमेरिकी सरकार द्वारा गिरफ्तार, रिहाई उपरांत जर्मन सरकार द्वारा नजरबंदी। फिर स्वीडन प्रवास। अंत में पुनः फिलाडेल्फिया (अमेरिका) जाना। भारत की स्वाधीनता हेतु निरंतर कार्य। अंततः यहीं 1939 में निधन।

विश्व डाक दिवस एवं राष्ट्रीय डाक सप्ताह

डाक टिकटों को 'नन्हे कागजी राजदूत' की संज्ञा दी जाती है। विश्व का प्रथम डाक टिकट *पैनी ब्लैक* माना जाता है जो 6 मई, 1840 को इंग्लैंड की महारानी विक्टोरिया की तस्वीर के साथ जारी हुआ था। भारत में पहला डाक टिकट आधिकारिक रूप से 1 अक्तूबर, 1854 को महारानी विक्टोरिया की तस्वीर के साथ ही जारी किया गया था। हालाँकि इसके पूर्व, एशिया में पहला डाक टिकट तत्कालीन सिंध प्रांत में 1 जुलाई, 1852 को जारी किया जा चुका था, जिसे सिंध डाक टिकट नाम से ख्याति मिली हुई है।

विश्व भर में 9 अक्तूबर को विश्व डाक दिवस एवं 9 से 15 अक्तूबर तक राष्ट्रीय डाक सप्ताह मनाया जाता है।

दरो-दीवार पर हसरत से नजर करते हैं
खुश रहो अहले वतन, हम तो सफर करते हैं।

अशफाकउल्ला खाँ
जन्मदिवस स्मरण, 22 अक्तूबर (1900)

एक दिन हिंदी एशिया ही नहीं, विश्व की पंचायत में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगी।

गणेश शंकर विद्यार्थी
जन्म दिवस : 26 अक्तूबर (1890)

विदेशी भारतीय विदुषी; सामाजिक कार्यकर्ता, लेखिका एवं शिक्षिका। बालिका शिक्षा की बड़ी पैरोकार।

भगिनी निवेदिता (मार्गरेट एलिजाबेथ नोबल)
जन्म : 26 अक्तू. (1890); निधन : 13 अक्तू. (1911)

2011 में 1000 लड़कों पर 914 लड़कियाँ थीं। 1970 में यह संख्या 976 थी।

तीन कविताएँ : तीन रंग

दो अक्तूबर

रामगोपाल राही

राष्ट्रपिता गाँधी को अपने
जगत जानता सारा
जब तक धरती-गगन रहेंगे
नाम न जाए बिसारा।

महामानव वो, उनने जीवन
परहित ही गुजारा
निर्धन, निर्बल, देश की सेवा
करके दिया सहारा।

दो अक्तूबर गाँधी जी का
जन्म दिवस है प्यारा
सचमुच उनसे गौरवशाली
भारत देश हमारा।

लाखेरी, बूँदी, राजस्थान

शीत-ऋतु

रमेशचंद्र पंत

आई है ऋतु
शीतकाल की
हुए मेघ जी गोल
बजा रही हैं
सर्द हवाएँ
शीत-लहर का ढोल।

बल खाती
लहराती नदिया
हुई बहुत है शांत
आग उगलते
सूरज जी भी
हुए बहुत हैं क्लांत।

धूप बुलाती
अलस्सुबह ही
छत पर अपने पास
गरम-गरम
ऊनी कपड़ों के
हुए सभी हैं दास।

द्वारहाट, अल्मोड़ा, उत्तराखंड

किताब

रामप्रसाद शर्मा 'प्रसाद'

किताब तो है
इल्म सिखाती
अच्छी दोस्त
यह बन जाती।

पढ़ो रोज तुम
नई किताब
पकड़ो हाथ
अच्छी किताब।

कई मुद्दों को
यह सुझाती
किताब अच्छा
सबक सिखाती।

आँख तीसरी
खोलती किताब
पढ़ो मुझको
बोलती किताब।

बहुत कुछ हमें
देती किताब
हमसे कुछ न
लेती किताब।

समझो इसको
बड़ा खजाना
दिल लगाकर
तुम पढ़ जाना।

सिहाल, कांगड़ा, हि.प्र.

पुराना कोट पहनो और नई पुस्तक खरीदो। –ऑस्टिन फेल्प्स

किताबें, ज्ञानी गुनिया
किताबें, प्यारी मुनिया
कारूँ का खजाना, किताबें
किताबें, सारी दुनिया।
आनंद बिल्थरे, बालाघाट, म.प्र.

सबकी सुध लेती किताब
अपना सब कुछ देती किताब
जो पढ़ ले इसे ध्यान से
उसे महान बना देती किताब।
बद्री प्रसाद वर्मा अनजान, गोलाबाजार, गोरखपुर, उ.प्र.

जीवन का उत्थान किताबें
हर मानव का मान किताबें
जीवन को मिलती हैं खुशियाँ
जीवन का सम्मान किताबें।
प्रो. शरद नारायण खरे, मंडला, म.प्र.

मिट जाएगा
जग का अंधियार
अक्षर-दीप जलाओ तो सही!
डॉ. अंजना अनिल, अलवर, राजस्थान

किताब पढ़ें
दूसरों को पढ़ाएँ
आगे बढ़ाएँ।
माता प्रसाद शुक्ल, ग्वालियर, म.प्र.

पुस्तकें मन के लिए साबुन का कार्य करती हैं। –महात्मा गाँधी

पाठकीय प्रतिक्रिया

- साक्षरता, शांति और विकास को समर्पित यह अंक अच्छा लगा। साक्षरता एवं हिंदी दिवस पर विशेष सामग्री उपयोगी थी। सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की कविता एवं रजिया का शिक्षा अभियान (पृ. 7) विषयक आलेख अच्छे थे। केवल आठ पृष्ठों में इतना सब कुछ इतने सुंदर ढंग से प्रस्तुत करने हेतु मेरी बधाई।
  रूपनारायण काबरा, जयपुर, राजस्थान
- सितंबर अंक मिला। कुछ बिंदुओं पर आपका ध्यान दिलाना चाहूँगा। राष्ट्रपति सर्वपल्ली राधाकृष्णन के नाम के पहले 'डॉ.' लगाया जाना उचित था। उन पर सामग्री भी होनी चाहिए थी। हिंदी दिवस के जिक्र के क्रम में महात्मा गाँधी की तस्वीर छापना उचित होता। पृ. 6 में 'जिसको न निज गौरव...' वाली पंक्तियों के रचयिता मैथिलीशरण गुप्त हैं।
  ओम प्रकाश मंजुल, पीलीभीत, उ.प्र.
  (प्रासंगिकता के अनुरूप सामग्री चयन के क्रम में सब कुछ समेटना संभव नहीं हो पाता। पत्रिका की अपनी पृष्ठ सीमा है। गलतियों पर ध्यान दिलाने हेतु धन्यवाद। **–संपा.**)
- *साक्षरता संवाद,* अगस्त 2013 : अंक का अवलोकन करने पर इसकी संपूर्ण सामग्री सहज, सरल, सुबोध एवं प्रोत्साहनपूर्ण लगी। हमारे राष्ट्रीय प्रतीक एवं महापुरुषों से संबंधित जानकारी उपयोगी थी। पत्रिका कुल मिलाकर ज्ञानवर्धक है।
  दर्शन देवी, अलीगढ़, उ.प्र.
- *साक्षरता संवाद* निरंतर मिल रही है। ज्ञानवर्धन हो रहा है। मित्रों को भी पढ़वा रहा हूँ। **माता प्रसाद शुक्ल,** ग्वालियर, म.प्र.
- साक्षरताकर्मियों एवं नवसाक्षरों के लिए प्रकाशित किया जाने वाला **सा. सं.** वस्तुतः सभी आयु वर्ग के लिए समान रूप से उपयोगी जान पड़ता है। इसका हर अंक ज्ञानवर्धक एवं अन्वेषणपूर्ण सामग्री से सुसज्जित होता है। **पं. बी. एन. मुदगिल,** रोहतक, हरियाणा
- **सा. सं.** नियमित मिल रही है। छत्तीसगढ़ के आदिवासी बहुल कोरिया का प्रमुख तहसील है मनेंद्रगढ़। वहाँ साक्षरता की कक्षाओं के नवसाक्षरों को *साक्षरता संवाद* पढ़ते देखता हूँ तो खुशी होती है। 'नवसाक्षरों के लिए' पन्ना तो वे जरूर पढ़ते हैं। उनके पढ़ने-पढ़ाने एवं साक्षरता के प्रति रुचि बढ़ाने में आपकी पत्रिका का अपूर्व योगदान है। **सतीश उपाध्याय,** मनेंद्रगढ़, कोरिया, छत्तीसगढ़
- ध्यानचंद पर लघु आलेख पढ़कर अच्छा लगा। ध्यानचंद का झाँसी से गहरा ताल्लुक रहा है। उन्होंने जीवन का पहला मैच यहीं खेला था। उनका आवास तथा स्मारक भी यहीं है। झाँसी उनकी शिक्षा, बचपन, युवावस्था, नौकरी और स्मृतियों से जुड़ा है। इस आशय का उल्लेख आलेख में नहीं था। राष्ट्रीय प्रतीकों में राष्ट्रीय खेल हॉकी भी माना जाता है। वैसे, अंक अच्छा लगा। कविता 'नन्ही लड़की' बेहद हृदयस्पर्शी लगी। राष्ट्रीय पुस्तकालय दिवस विषयक आलेख अच्छा था।
  प्रेम कुमार गौतम, झाँसी, उ.प्र.
- **सा. सं.** के अंक मिलते हैं। नवसाक्षरों के लिए कविताएँ ज्ञानवर्धक एवं प्रेरक होती हैं। आलेख एवं अन्य सामग्री भी स्तरीय होती है। 'मिसाल' व 'प्रेरणा' जैसे स्तंभ कृपया लगातार दें।
  डी. पी. सिंह, बेंगलुरु, कर्नाटक
- साक्षरता का संदेश देती पत्रिका **सा. सं.** साक्षरताकर्मियों-नवसाक्षरों के साथ-साथ बच्चों के लिए भी लाभदायक है ऐसी मेरी धारणा है। **डॉ. बी. एल. कपूर,** मंडी, हि.प्र.

रचनाकार कृपया ध्यान दें : **पत्रिका के अनुकूल शिक्षा, साक्षरता, पुस्तक एवं पठन-पाठन से संदर्भित रचनाएँ ही भेजें–प्रेरक, उद्‌बोधक। साफ एवं पठनीय शब्दों में लिखें, रचनाएँ संक्षिप्त भेजें। बाल रचनाएँ कृपया ट्रस्ट की 'पाठक मंच बुलेटिन' पत्रिका में भेजें।** *–संपा.*

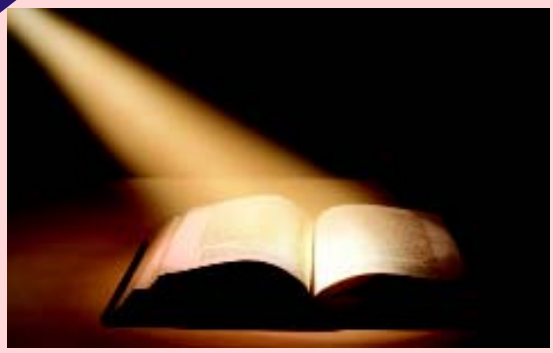

आओ एक अभियान चलाएँ

भोमाराम बैरवा

आओ एक अभियान चलाएँ
साक्षरता का अलख जगाएँ
पुस्तकों को अपना परम मित्र बनाएँ
आदर्शों का सुंदर महल सजाएँ
भारतीय समाज में नैतिकता लाएँ
नैतिकता का सुंदर पाठ पढ़ाएँ
अंधकार को दूर हटाएँ
अज्ञानता को दूर भगाएँ
समतामूलक समाज बनाएँ
मेहनत, लगन को गले लगाएँ
अक्षर-अक्षर से सुंदर साहित्य बनाएँ
खत लिखने का एक अभियान चलाएँ
जीवनरूपी बगीचे में खुशबू के फूल खिलाएँ
पढ़-लिखकर अच्छा नाम कमाएँ
अंधविश्वास को दूर हटाएँ
तम से हम जल्दी छुटकारा पाएँ
नव सृजनकर्ताओं को प्रकाश में लाएँ
आओ एक अभियान चलाएँ।

बसवा, दौसा, राजस्थान

पढ़ाई का लाभ
कभी-न-कभी
जीवन-पथ दिखाती
अच्छा इनसान बनाती।

डॉ. नरेंद्र नाथ लाहा, *ग्वालियर, म.प्र.*

सृष्टि नया इतिहास रचेगी

रामप्रसाद शर्मा 'प्रसाद'

अनपढ़ता का शाप न ढोना
साक्षरता के बीज बोना।
फसल जब लहलहाएगी
नई क्रांति तब आएगी।
झोंपड़ी बनेगी अक्षर-धाम
चमकेगा तब सबका नाम।
अशिक्षा का मिटे अंधकार
खुशहाल रहें सब परिवार।
अज्ञान-अँधेरा छँट जाएगा
बच्चा-बच्चा इतराएगा।
सुख-समृद्धि की बयार बहेगी
वाह! वाह!! तब दुनिया कहेगी।
'प्रसाद' चहुँदिश धूम मचेगी
सृष्टि नया इतिहास रचेगी।

सिहाल, कांगड़ा, हि.प्र.

अनपढ़ता को दूर भगाओ
पढ़ना-लिखना जरा सीखो तुम
कब तक तुम अँगूठा लगाओगे
अब हस्ताक्षर करना सीखो तुम।

सुरेंद्र 'अंशुल', *अंबाला शहर, हरियाणा*

R. N. I. No. 65414/96
Postal Regd. No. DL-SW-1/4078/2012-14
Licence to post without prepayment
L. No. U(SW) 22/2012-14
Mailing date 25/26 same month
Date of publication 15/10/2013

संदेश

प्रो. शरद नारायण खरे

पढ़ लो भाई
कहती माई।

पढ़ने से समझ आती है
ज्ञान की आँख खुल जाती है
अपने सारे कार्य स्वयं कर
सारी मुश्किल मिट जाती है
सच्ची बात
समझ में आई।

अच्छा-बुरा जान सकोगे
सही-गलत पहचान सकोगे
जोड़-भाग, गुणा-घटाना
इनको तब तुम मान सकोगे
लिखेगी किस्मत
आज स्याही।

मंडला, म.प्र.

नवसाक्षरों के लिए पुस्तकें

हर विषय की पुस्तकें
अपनी भाषा में रोचक, ज्ञानवर्धक पुस्तकों का

सूची-पत्र मँगवाने के लिए आज ही निम्नलिखित पते पर संपर्क करें :

प्रबंधक (विक्रय एवं विपणन)
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
ई-मेलः office.nbt@nic.in
वेबसाइट : www.nbtindia.gov.in

'साक्षरता संवाद' के अंतिम दो पृष्ठ 7 और 8, नवसाक्षरों के लिए हैं। इसे अलग करके अन्य पठन सामग्री के साथ रखा जा सकता है।

संपादक : **बलदेव सिंह 'बद्दन'**
कार्यकारी संपादक : **दीपक कुमार गुप्ता**
उत्पादन अधिकारी : **नरेन्द्र कुमार**

साक्षर भारत

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
ई-मेलः office.nbt@nic.in
वेबसाइट : www.nbtindia.gov.in

पाठकों से अनुरोध है कि वे **साक्षरता संवाद** के बारे में अपने विचार संपादक को लिखें।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत की ओर से सतीश कुमार द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा पुष्पक प्रेस प्रा.लि., 203-204, डी.एस.आई.डी.सी. शेड, फेज-I, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित और राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 से प्रकाशित। संपादक : बलदेव सिंह 'बद्दन'।

एस.एस. इंटरप्राइजेज, प्रथम तल, जी.जी.-1/36बी, विकासपुरी, नई दिल्ली-110018 से टाइपसेट।

भारत सरकार सेवार्थ

डाक वापसी की दशा में कृपया इस पते पर वापस करें :
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070